खुलकर जियें Alpha

आज बचपन, कल जवानी,
परसों बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है।

चलो हंस कर जिए, चलो खुलकर जिए,
फिर ना आने वाली यह रात सुहानी,
फिर ना आने वाला यह दिन सुहाना।

कल जो बीत गया सो बीत गया,
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता,
आज और अभी जिओ, दूसरा पल हो ना हो।

आओ जिंदगी को गाते चले,
कुछ बातें मन की करते चलें,
रूठो को मनाते चलें।

आओ जीवन की कहानी प्यार से लिखते चले,
कुछ बोल मीठे बोलते चले,
कुछ रिश्ते नए बनाते चले।

क्या लाए थे क्या ले जायेंगे,
आओ कुछ लुटाते चले,
आओ सब के साथ चलते चले,
जिंदगी का सफर यूं ही काटते चले।

17:56

Beta

11 पढ़क्कू की सूझ

एक पढ़क्कू बड़े तेज़ थे, तर्कशास्त्र पढ़ते थे,
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

एक रोज़ वे पड़े फ़िक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
"बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए?"

कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गज़ब है?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है।

आखिर, एक रोज़ मालिक से पूछा उसने ऐसे,
"अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे?

कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या अड़ता है?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है?"

मालिक ने यह कहा, "अजी, इसमें क्या बात बड़ी है?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है?

17:36

जब तक यह बजती रहती है, मैं न फ़िक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ।"

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, "तुम रहे सदा के कोरे!
बेवकूफ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े!

अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गर्दन को खूब हिलाए।

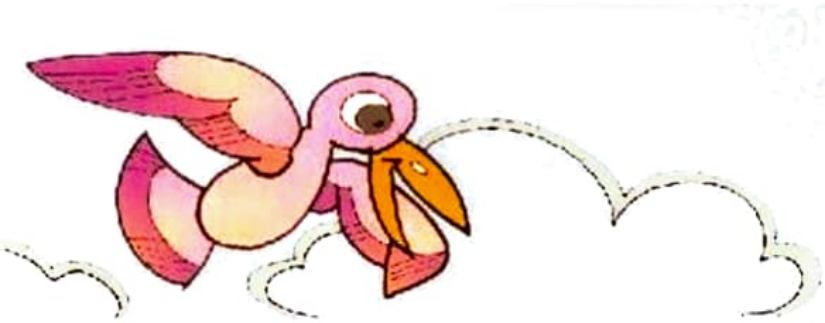

जब तक यह बजती रहती है, मैं न फ़िक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ।"

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, "तुम रहे सदा के कोरे!
बेवकूफ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े!

अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गर्दन को खूब हिलाए।

घंटी टुन-टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे?

मालिक थोड़ा हँसा और बोला कि पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर, वहीं इसे फैलाओ।

यहाँ सभी कुछ ठीक-ठाक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है।

रामधारी सिंह दिनकर

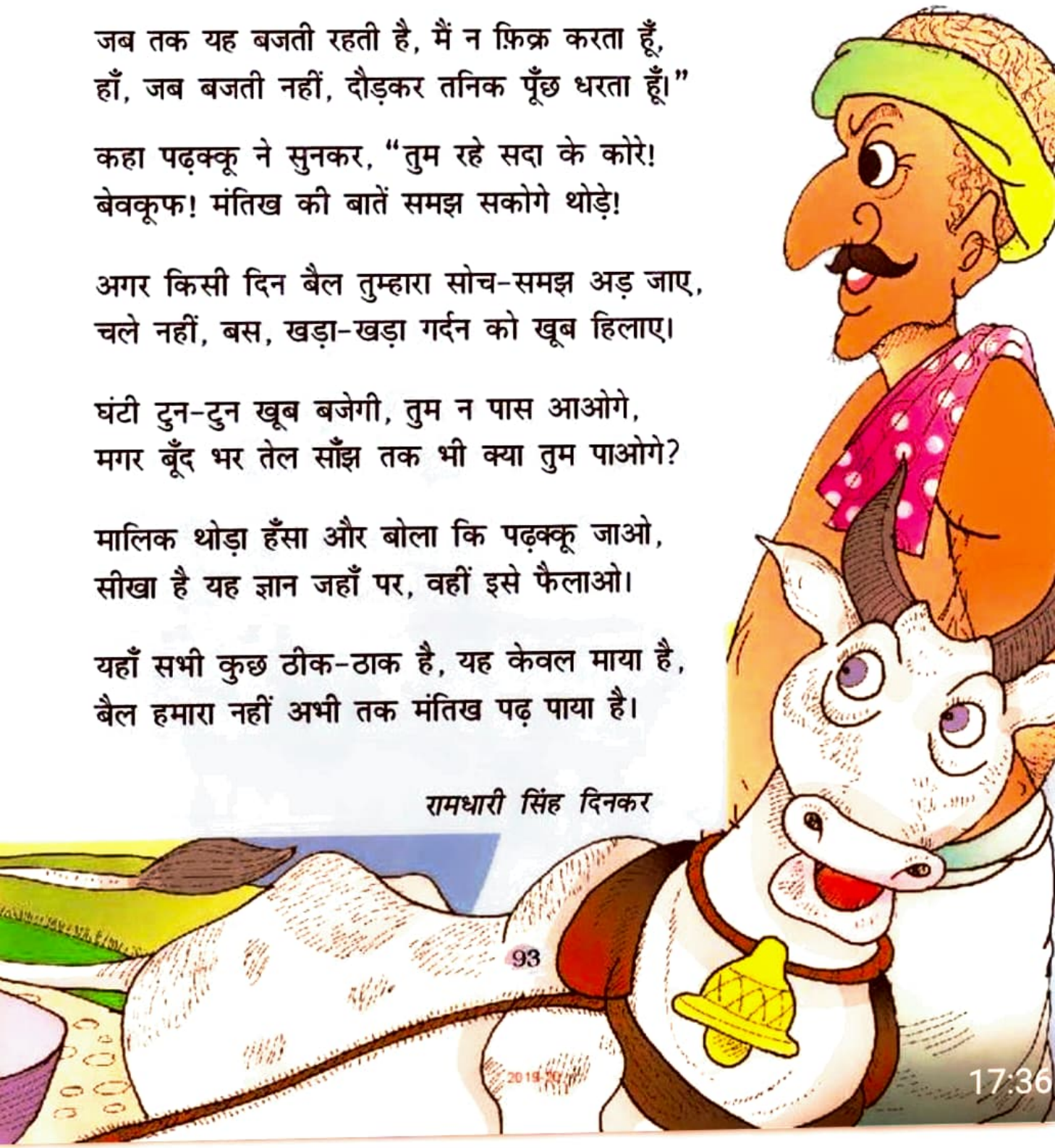

Delta

आओ हम पढ़ें-लिखें
(साक्षरता दिवस)

आओ हम पढ़ें-लिखें, देश को सुधार लें।
डूबती-सी नैया को, मिल के हम उबार लें॥

भार को बढ़ा रहीं, अनपढ़ों की टोलियाँ।
छिन-भिन्न कर रहीं, भिन्न-भिन्न बोलियाँ।
बोलियों की टोलियाँ, टोलियों की बोलियाँ।
राव रंक बन रहे, टाँग-टाँग झोलियाँ॥

झोलियों से नफरतों की बर्फ को बुहार दें।
प्यार की सुगंध से सनी बयार डार लें।
आओ हम पढ़ें-लिखें, देश को सुधार लें।

भान कब हुआ हमें, मान-चीर घट रहा।
पीर कब हुई शरीर, अंग-अंग कट रहा।
देश में विदेश का, चरित्र यूँ सिमट रहा।
बात-बात पर समाज टूक-टूक बँट रहा।

टूटते समाज के स्वरूप को सँवार लें।
छूआछात छोड़, मन के मैल को पखार लें।

आओ हम पढ़ें-लिखें, देश को सुधार लें।
देश के अतीत स्वाभिमान के लिए पढ़ें।
शब्द-अंक ज्ञान वर्तमान के लिए पढ़ें।
कर्म-धर्म ग्रंथ हम भविष्य के लिए पढ़ें।
नित पढ़ें सतत बढ़ें विषम पहाड़ पर चढ़ें॥

मुश्किलों की भीड़ में से, रास्ता निकाल लें।
जंगलों को मंगलों के, रूप में सँभाल लें॥
आओ हम पढ़ें-लिखें, देश को सुधार लें।

आज हम पढ़ें स्वदेश की समृद्धि के लिए।
वस्त्र की, अनाज की विशेष वृद्धि के लिए।
हम पढ़ें कुरीतियों के सर्वनाश के लिए।
हम सभी पढ़ें, समाज के विकास के लिए।

यह दिशा विकास की, हम सिकेरते चलें।
रश्मियाँ प्रकाश की, हम बिखेरते चलें।
आओ हम पढ़ें-लिखें, देश को सुधार लें।

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

शांति नही तब तक

Gamma

शांति नही तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो।
नही किसी को बहुत अधिक हो
नही किसी को कम हो
स्वत्व मांगने से न मिले
संघात पाप हो जाए
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या मिट जाए ?
न्यायोचित अधिकार मांगने
से न मिले, तो लड़ के.
तेजस्वी छींनते समर को,
जीत, या कि खुद मर के.
किसने कहा, पाप है समुचित.
स्वत्व प्राप्ति हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना मरना?
यह समर तो और भी अपवाद है
चाहता कोई नही इसको, मगर
जूझना पड़ता सभी को, शत्रु जब
आ गया हो द्वार पर ललकारता,
छीनता हो स्वत्व कोई, और तू
त्याग तप से काम ले, यह पाप है.
पुण्य है विच्छिन कर देना उसे
बढ़ा रहा तेरी तरफ जो हाथ हो
युद्ध को तुम निध कहते हो मगर
जब तलक है उठ रही चिंगारियाँ
भिन्न स्वार्थो के कुलिश संघर्ष की,
युद्ध जब तक विश्व में अनिवार्य है.
और जो अनिवार्य है, उसके लिए
खिन्न या परितप्त होना व्यर्थ है
तू नही लड़ता, न लड़ता, यह आग
फूटती निश्चय, किसी भी ब्याज से

कदम मिला कर चलना होगा

Omega

बाधाएँ आती है आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगा कर जलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना हागा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

उजीयारे में, अंधकार में
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा।

कदम मिलाकर चलना होगा।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के 1

Sigma

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

❑ *शिवमंगल सिंह 'सुमन'*

18:02